7 June_kupw.pdf

Title : Jyotisha Sangraha

Page 2 / 36

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

३।१०।१। स्तुत्वा सुवर्णमन्त्रयं ॥ मेरुर्मेषुंव भवेद्भवतात्रिदशप्रभृति
दक्षेप्यथास्त्रिष्ठेषु मेरुत्रिदिवमोपलसवर्मेकांशं भवद्देवभयत्वदेवते ॥ प्रज्ञा
मित्रभन्ते ॥ दधुरयीईशि भूर्वोपवरूद्रधस्तु श्रीगावत्रीधु वर्षभु
हस्तदधूतीसांदिरदुभेश्रीद्धिटभेश्रितठः स्वाहा ॥ नत्रवरेश्वरु
ण्दत्रेवमेश्रीवठः नभूतेवक्र त्वनमों रटसूत्रंत्रनभेकटमात्रेवम
ंमद्धमिभाविशर्मभो ॥ वक्रवखभूकमभूकदेविशभूयाद्धुभ रहूत्रिगल
ङित्रः धसुवेमपृपुर्वेशुभे ॥ नठभमि ॥ येवे ॥ भेरवमि। कदूघटे मि
टघवे ॥ भिनभूहुमीयेठगः ॥ सघरदे ॥ भवकमभुगेधड़ः ॥ सरवेट म
कनंसंवकयेड भेपकयो सठवेदं लीववदं कदूवदं गृहं रवंचठगी
मुठमुः गृहं प्र। हे। मा। गा। का। मन्तुठः ॥ रवंक्रारसंड भिमो प्र।म। ली
हेकयेडो ८।९, ०३। सहस्रकवसंवेकयेडो ममविवदनकरमि ॥ अभव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विष्णुः गणेश स्वामिकः

[illegible]

सुखदाभिर्ह माद्देवकदुगी मधुगाभिप
पगर्ह: वह्नै: ॥ मेमिनः मधुमदवर्णिर्व
मकेभिनवलिङ्गनी हेमपाडभपुक
गिगवितवदेवतुकेठवडि रुकठुगेवह
केडेवंमकायायविद्धिक् शठठनवभुभ
विभूपाडभिपामाङिलीमभी ॥ उडिभवाल
भिड ॥ मुखभुलवभिरभा ॥ मडदमेगन
वाड्डभिड्डलेवठमाडमा मुठपुकेउपि
मुख्यपयपुत्रविवल्लयेडी ॥ मुखविवड
लवभा ॥ हहलवेवयेमक्समुमुवडुड
लवपा मुभुमकूमयः पदमवपुलउग
भमे ॥ वदयपाठमपापमुन्दपप्रमुकेह

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

त्रुं सिंहमकरं चविलिखेत् ॥ वृषभमिथुनद्विपदस्मी ॥ कर्कटवृश्चिकमीनं चतुष्पद त्रिकोण
त्रिकोणेषा धीतिभंकान्त्रत्वहं द्विपदस्मी त्रुटयः ॥ मीनमेषवृषलग्ने ऽपि ऽत्रमृगमी
नवमेषु गमी चतुष्पद द्विपदस्मी शत्रुः मेषशीर्षोदयः पृष्ठोदयः ॥ मनु मेन

वृषभनवपदकमा ॥ वरदे

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	धं	मं	कुं	मी	
मी	मे	वृ	मि	क	तुं	कुं	तं	वृं	कुं	मी	कुं	सिंहद्विपदस्मी
वृ	मे	क	मि	कं	सिं	वृ	तु	मं	वृ	मं	मं	मकरद्विपदस्मी

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी
सिं	कं	तु	वृ	ध	मं	कुं	मी	मे	वृ	मि	क

पद्मकर्कटकटयः नवमेवत्रः ॥ ति भदनाम्नस्मदत्रे ॥ पाद्ममकर ॥ कर्कट नव
योनवले ॥ भद्रनाम्नद्दमद्रुत विपरीतं वलनीयमा ॥ यन्निवपुष्करकातिपः
तकारवे ॥ वृषभवपुष्करकातिप ॥ भिट्टादव उदपुरठमा ॥ पुष्करपुष्कवनवष्
त्रुकवद्विपदस्मी नक्षत्र भद्रपंडिता तकाति पहिला नेत्रमेहत्पुरुषयपा ऽपि नदुष्कं
वमिपुः ॥ मिथम्भपिठ्ठवनीदकर्ट पत्र्वरावं भित्रपदं वयक्ष त्रिपुष्टे किर

हा॰ मं॰ ३

[illegible]

विवर्द्धः शुभैवासः ८ कर्कस्थितित्रयं ग्रावीवर्द्धस्तु ठ क ट कः ॥ वक्तव्ये केयादि

स्थित्रगामिवत्सम्भद्री इ इ भ्राषं नठ ठ भ्र ॥ विस्थित्रमकेंपयिस्थित्रगामिगत्सभद्री इ

इ भ्राषं नठ ठ इभ्र ॥ इत विवर्द्धः भाग्यमवास्यां ॥ वक्तुमुके भा ~ वे गविये ग

दि धा द्वि वृ ध्मी नि प ग इ : ४९३ : दिकि ~ श्रीउ पामविशादि श्रा भ भ मभु के पि

मेषे वृश्चिके ततुनक्षदि श्रा भवीहैं : ॥ वृषभ पवेके : ॥ वरूलैमृत्तुयानीपाउं

भिं दे यषा भवुभा ८ द भ्रुं नमये इ र भवषा या ती व ल ये डा

वृषभ्रुति विमाः वृषभ मकृष्येः श्रीउभुषा भाडि पनिष

मा भिरुहा ~ मेभुषा श्रीउ प्रवकपु ना ९ भुष डिउ शी

वृषषैगभा (काणमुक्ते भुद् ह्नैं उषसगा ९ ८ भिं दये

भावा भ्रवक्रमंत्र भाग भय विद्वत्र्यः मेषव नाये वकु मये ये भादिष

मुषः नित्रू पूये यषा मे व कषा प्रगुतिमाय ग (॥

क्षु	दं	भा	विश्वतो
उं	ठं	भि	वारितो
भ	भि	उ	वसूतो
के	धा	मं	मृगतो

ह्री.
भ.

ना	ति	कनाभुरी
भ	र	चनाभुरी
भु	मु	भुपकभुरे
मं	भुढ	भुपकभुरी
द	भु	भाद्विपभुरी
३।३	३	नि भुरि

मि	वि	सुभुभुरी
हे	मं	भनाभुरी
सु	प्रध	भकनभुरी
रु	ठ	नहभुरे
ठं	भुद	सिलभुरी
स	सि	दपभुरे
सि	न	भहनभुरे

मि	क	ति	मं	भीपुन
प	मि	स	भ	हिपुन
मि	क	गं	भ	उमि पुन

चुषप्रकना गी ॥ चुहेक नगीजनरे

।वियगंभहेकनगीभान्यहरु:॥ चहू कनगीभा[illegible]भपद उभद्विपहभुद्विरे [illegible]भुग॥ प्रकभाइरुकनगीदिध [illegible] कं[illegible]

नविहरे [illegible] भुरि भहस्रिरे

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] [illegible]

चुषप्रकनगीयसा[illegible]

कराया:[illegible]

चु	सु	न	हव	द	हे	पु	म	भुठ	प्रकनगी
ठ	भु	रि	भुकं	मि	चं	भुभ	ठं	उठं	भहनगी
ना	ि	जे	भ	भु	वि	उभं	मु	ह	चनहनगी

लग्नाद् ०,८,२,००।३,०४। पापग्रह [illegible] लग्ने [illegible] ०,८,२,०,३,०४। पापग्रह
[illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] लग्नात्
।०,८,२,०,३,०४। पापग्रहः [illegible]। [illegible] ०,८,२,०,३,०४ [illegible] ०,८,
२,०,३,०४। [illegible] [illegible] [illegible] पापग्रहः [illegible]
[illegible] [illegible] पापग्रहः [illegible] [illegible] [illegible] पापग्रह [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible] पापग्रहः [illegible] पापग्रहः [illegible]॥ [illegible]
[illegible] लग्न [illegible] [illegible]
[illegible] लग्न [illegible] [illegible]
[illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] लग्न [illegible]
[illegible]॥

[illegible] अ॰ १०

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ऽिभतिर्मैभत्रंभ्रीयभकथयो ह्रिंरीयेरुदूदेभः भुद्रू दमाश्रिंमकरयेत्। भंत्रुमेय
त्रि ह्रीयेपाषिक ह्रुयवि[illegible]करयेत्। [illegible] करयेत्
[illegible] ददेत्। [illegible] करयेत्
[illegible] दिपेत्। [illegible] देत्
[illegible]
[illegible]
[illegible] करयेत्। [illegible]
[illegible]

भु	[illegible]	ठि
व	[illegible]	[illegible]
म	ग	क

[illegible]

२७

[illegible]

वर्गमन वाहं नभस्कारमभाविडश्चां अथ ठिल्गुलेष्ठगं से धंठगं खण्यार्डे अभंठकटावि
धर्मंय गहनुरभाणठभूठवे ग्रुरुवि:॥ ॥ ४ग्राकं ठ्रुनृश्चवह श्रिविवंसयेन्यवेर्डा
अथ ठिल्गुलेष्ठगं से धंकूठनमवद्येर्गो ब्रुह्वेम शिशिकंड्रु भेपाविंमहिवभाे केमेर
उड्रयंस्त्रे ठबाठभयुर्वुत्ति नयुरे गृठ्ठ भश्नुकंडअतरह्नकेनश्चिंमठेश्चा मतेहुगग्रुयमकं
ठेमगणंठलंठवेश्च ॥ अथ शारिकाविचार: ॥ नइ ० २१० ठह ३१०४९

मं	भु	ना
ह्रि	हि	म
ब	श	ष

य ३३ ०३ शिशु ८ १ ०८ यठ ५ ०: ०५॥ अथ सप्तमी पाठु
नवहयेमसकपोड्रुपक्कं कठ्ठठम सनुहम सह्रयेकठड माह्रिमिवहिथठ्ठ
कैहमे मनुश्रुके मावि ब्रुहेठम ॥

ग्रुठ्ठद:	ग्रापागणपरा	वढ्ठसार्वु	९०३५
३सद्दठण	यठ्ठवठप	यवनव	समसठ्ठकु:
५ [illegible] ०३	३ ९०.२१	३१ १००५	८३ ०३ [illegible]

मवठयसुनविचार: ॥अथ सुनतंउमाते
ठ्ठयभुनभभाविडश्चां मंठमठवाविहगुसेधभुठनभ्फणश्च ॥ अथ सुनंठयमार्त
तह्र ॥ ठ्ठयसुनमन्ठ्ठ ॥ मंठमठ्ठठेधुठ ०,५. ठ्ठयवेनं ठ्ठयंगुनेमलग्नहडेन
ठगंमहेमश्चां नखुं शतिकमसेधंम ॥ अथ प्रकार: अथ सुनंठंउमांभपंठ्ठयसुन

संवत्। ८११०

१०